बाइबल टीचर

वर्ष 16 | जून 2019 | अंक 7

सम्पादकीय

मुझे अपने छोटे बच्चे का बपतिस्मा करवाना है

आपको बाइबल की बातें जानने के लिये बाइबल में से खोजना चाहिए। अधिकतर लोग पास्टरो, पादरियों तथा चर्च के लीडरों से प्रश्नों को पूछते हैं तथा यह लोग उन प्रश्नों के उतर बाइबल से न देकर अपने बनाये हुए उत्तर देते हैं। हम परमेश्वर के वचन में पढ़ते हैं कि बिरिया नामक स्थान पर जो लोग रहते थे वे पवित्रशास्त्र में से खोजकर देखते थे कि जो बातें हम सीख रहे हैं वो वैसे ही है, जैसे हमें सिखाया जा रहा हैं (प्रेरितों 17:11)।

बहुत से लोग जो अपने को मसीही कहते हैं उनका ऐसा मत है कि छोटे बच्चों का जन्म पाप के साथ होता है या वे पापी होकर जन्म लेते हैं। यानि उनका जन्म आदम के पाप के साथ होता है जिसे अंग्रेजी में ''ऑरिजनल सिन'' कहते हैं। वे ऐसा सोचते हैं कि आदम के पाप के कारण वे पाप के साथ जन्म लेते है और यह शिक्षा बाइबल के बिलकुल विपरित है। वे यह भी कहते हैं कि यदि एक छोटा बच्चा मर जाता है तो उसकी आत्मा स्वर्ग में नहीं जाएगी। वे यह शिक्षा भी देते हैं कि छोटे बच्चे अपने माता-पिता के पाप के कारण पापी होते है। यह मनुष्यों द्वारा बनाई गई शिक्षा है तथा बाइबल के अनुसार यह शिक्षा बिल्कुल गलत है।

बाइबल के अनुसार पाप व्यवस्था या परमेश्वर के नियम का विरोध है। यशायाह भविष्यदूक्ता ने यह बोला था कि तुम्हारे पापों ने तुम्हें परमेश्वर से अलग कर दिया है। (यशायाह 59:1-2) आज बहुत से लोग छोटे-छोटे मासूम बच्चों को कलीसिया में ले जाकर उनके सिर पर जल का छिड़काव कराते हैं तथा इसे बपतिस्मा कहते हैं। बाइबल का बपतिस्मा छिड़काव नहीं है बल्कि इसका अर्थ है गाड़े जाना। एक छोटे बच्चे को आप जल में नहीं डुबा सकते। पहली बात तो यह है कि छोटे बच्चे निष्पाप होते हैं परन्तु चर्च के लीडरों ने उन्हें पापी ठहरा दिया है, जो कि एक बड़े ही दु:ख की बात है। प्रभु यीशु ने कहा था ''जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा'' (मरकुस 16:16)। एक छोटा बच्चा न विश्वास कर सकता है और न ही बपतिस्मा ले सकता है।

मसीहीयत के इतिहास से हमें पता चलता है कि 175 ई. सन तक बच्चों के बपतिस्मे के विषय में किसी को पता नहीं था। यीशु ने जब कहा था कि छोटे बच्चों को मेरे पास आने दो, उन्हें मना मत करो क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसों ही का है। (मत्ती

19:14)। यीशु ने यह इसलिये कहा था क्योंकि छोटे मासूम बच्चे पापी नहीं है। मित्रो, छोटे बच्चे बपतिस्में के लिये नहीं है, आप क्यों ऐसे मासूमों के साथ अन्याय कर रहे हैं? यह बपतिस्में का एक मजाक है। बपतिस्मा केवल उन लोगों के लिये है जो अच्छे-बुरे का ज्ञान रखते हैं। जिन्हें यह पता है कि उचित और अनुचित क्या है।

यीशु ने मत्ती 28:19 में कहा था जाओ, तमाम स्थानों पर और सबको सिखाओं तथा उन्हें बपतिस्मा दो। आप एक छोटे मासूम को सुसमाचार नहीं सिखा सकते। छोटे बच्चे विश्वास भी नहीं कर सकते, इसलिये हमें यह समझना चाहिए कि बपतिस्मा छोटे बच्चों के लिये नहीं है। कई लोग तर्क देते हैं कि जब एक परिवार ने बपतिस्मा लिया था, जैसे कि हम लुदिया ओर उसके परिवार के बारे में पढ़ते हैं। (प्रेरितों 16; 14, 15), तो उसमें बच्चे भी शामिल होंगे। यह अनुचित धारणा है। पतरस ने अपने प्रचार में कहा था, ''मन फिराओ और अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लो।'' (प्रेरितों 2:38)। छोटे बच्चे पापी नहीं है इसलिये उन्हें मन फिराने की आवश्यकता नहीं है। बच्चे परमेश्वर की दृष्टि में सुरक्षित हैं।

दु:ख की बात तो यह है कि यह सब जानने के पश्चात कई लोग कहते हैं कि मुझे अपने बच्चे का बपतिस्मा करवाना है। कई लोग दाऊद का उदाहरण देते हैं जैसे कि भजन संहिता 51:5 में लिखा है: कि ''मैं अधर्म के साथ उत्पन्न हुआ और पाप के साथ अपनी माता के गर्भ में पड़ा।'' कुछ लोग कहते हैं कि जब बच्चे का जन्म होता है तो वह माता-पिता के पाप को ले लेता है। दाऊद यहां अपने पाप की बात नहीं कर रहा था। संसार में पाप था और उसके बीच में उसने जन्म लिया। अर्थात् दाऊद यह नहीं कह रहा कि मैं पापी मनुष्य की तरह जन्मा हूं। रोमियों 5:19 में लिखा है, ''क्योंकि जैसा एक मनुष्य के आज्ञा न मानने से बहुत लोग पापी ठहरे वैसे ही एक मनुष्य के आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्मी ठहरेंगे।'' यहां हम देखते हैं कि जब आदम ने आज्ञा तोड़ी तो वह पापी हो गया, उसे पापी बनाया नहीं गया था। जब परमेश्वर ने उसे बनाया तो वह पवित्र था। लिखा है, ''जैसे कि आदम में सब मरते हैं, वैसे ही मसीह में सब जिलाए जाएंगे।'' (1 कुरि. 15:22)। यहां वह शारीरिक मृत्यु की बात कर रहा है तथा मृतकों के जी उठने की बात कर रहा है।

आज बहुत सारे लोगों का ऐसा विश्वास है कि छोटे बच्चों को बपतिस्मा दिलाना आवश्यक है। पहली बात तो यह है कि यह बपतिस्मा नहीं है, बल्कि जल का छिड़काव है। नया नियम यूनानी भाषा में लिखा गया था और इस भाषा में बपतिस्मे के लिये ''वैपटिज़ो'' शब्द इस्तेमाल हुआ है जिसका अर्थ है किसी चीज के भीतर गाड़े जाना।

बाइबल हमें बताती है कि बपतिस्में के द्वारा उसकी यानि यीशु की मृत्यु में हम गाडे जाते है। प्रेरित पौलुस कहता है, ''क्या तुम नहीं जानते कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए ताकि जैसे मसीह महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। (रोमियों 6:3-4)। जब फिलिप्पुस ने खोजे को बपतिस्मा दिया तो लिखा है वे दोनों जल में उतर पड़े। (प्रेरितों 8:38, 39)। थोड़ी सी बूंदों की छिड़काव

से हम पानी में नहीं गाड़े जाते।

बाइबल सब बातों में हमारी कुंजी है। बाइबल में कहीं पर भी हम नहीं पढ़ते कि कभी किसी बच्चे का बपतिस्मा हुआ हो। व्यवस्था या बाइबल का नियम तोड़ना पाप है। (1 यूहन्ना 3:4)। कोई भी छोटा बच्चा पाप नहीं कर सकता, क्योंकि उसे अच्छे-बुरे का ज्ञान नहीं है।

यीशु ने कहा था, ''मैं तुम से सच्चा कहता हूं यदि तुम मन न फिराओ और बालकों के समान न बनो तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने नहीं पाओगे।'' (मत्ती 18:3)। यह आयत हमें बताती है कि बच्चे निष्पाप होते हैं इसीलिये यीशु ने कहा था कि स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने के लिये बच्चों के समान बनो। जो बच्चे यीशु के पास आये वे पापी नहीं थे। जब बच्चे का जन्म होता है, वह बिना पाप के होता है और वैसे ही परमेश्वर ने जब आदम को बनाया था तो वह बिना पाप के था। जब आप छोटे थे तो शायद आपके माता-पिता ने छिड़काव का बपतिस्मा कराया हो, जोकि वातस्व में बपतिस्मा नहीं था परन्तु अब यह समय है कि आप बपतिस्मा लें।

परमेश्वर का वचन या मनुष्यों की रीति?

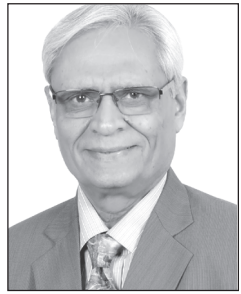

सनी डेविड

जब हम आत्मिक या धार्मिक बातों पर विचार करते हैं, तो दो बातें विशेष रूप से हमारे सामने उभरकर आती है, अर्थात् एक तो परमेश्वर का वचन। अर्थात परमेश्वर हम से क्या चाहता है; उसने हमें क्या आज्ञाएं दी हैं, उसकी इच्छा क्या है? और दूसरे स्थान पर हैं मनुष्यों के बनाए रीति और विधियां। जिन्हें लोग मानते तो यह समझकर हैं, कि परमेश्वर उनसे प्रसन्न होगा, क्योंकि वे अपनी ओर से एक धार्मिक काम कर रहे हैं। उनकी आज्ञा परमेश्वर ने नहीं दी है। क्योंकि जो कुछ भी परमेश्वर मनुष्य से चाहता है, उन सब बातों की आज्ञा परमेश्वर ने हमें बाइबल में लिखवाकर दी है। लेकिन खेद की बात यह है, कि अधिकतर लोग बाइबल तो पढ़ते ही नहीं है, पर जिन बातों को उन्हें परमेश्वर की इच्छा बनाकर सिखाया जाता है, उन बातों को मानकर ही चलते हैं।

जैसे कि बहुत से लोग अपने छोटे-छोटे बच्चों का बपतिस्मा करवाते हैं। जबकि बाइबल से हम यह सीखते हैं कि बपतिस्मा उन लोगों को लेना चाहिए जो मसीह के सुसमाचार को सुनकर उसमें विश्वास लाते हैं, और अपने-अपने पापों से मन फिराते हैं। (मरकुस 16:15-16; 2:38 तथा 8:12)। ऐसे ही, बहुत से लोग तस्वीरों और आकृतियों के सामने खड़े होकर प्रार्थना करते हैं। जबकि बाइबल में ऐसा करने को मना किया गया है। क्योंकि परमेश्वर तो आत्मा है। (यूहन्ना 4:24)। इसलिये परमात्मा की कोई भी सूरत या आकृति नहीं बनाई जा सकती। परमेश्वर की बाइबल में लिखा है कि,

तू अपने लिये कोई मूर्ति खोदकर न बनाना, न किसी की प्रतिमा बनाना, जो आकाश में, या पृथ्वी पर, या पृथ्वी के जल में है। तू उनको दण्डवत न करना और न उनकी उपासना करना'' (निर्गमन 20:4-5)। लोग अक्सर कहते हैं, कि ''यह तो प्रभु यीशु मसीह की तस्वीर है'', जिसे वे अपने घर में और अराधना के स्थानों में लगाते हैं, और उसे माला पहनाते हैं, और उसके सामने दण्डवत करते है। पर क्या वास्तव में वह प्रभु यीशु मसीह की तस्वीर है? जी नहीं। वह चित्रकारों की कल्पना से बनाया गया एक चित्र हैं परमेश्वर ने हमें प्रभु यीशु मसीह की कोई तस्वीर नहीं दी है। क्योंकि वह नहीं चाहता कि हम उसकी तुलना कागज या लकड़ी पर बने चित्रों से करें। फिर देखें, कि बाइबल में यशायाह की पुस्तक के 53 अध्याय की 2 और 3 आयतों में प्रभु यीशु मसीह को कैसे दर्शाया गया है? लिखा है, कि उसकी न तो कुछ सुन्दरता थी कि हम उसको देखते, और न उसका रूप ही हमें ऐसा दिखाई पड़ा कि हम उसको चाहते। वह तुच्छ जाना जाता, और मनुष्यों का त्यागा हुआ था, वह दुखी पुरुष था, रोग से उसकी जान पहचान थी, और लोग उस से मुख फेर लेते थे। वह तुच्छ जाना गया, और हम ने उसका मूल्य न जाना। और अब जरा देखिए उस चित्र को जो शायद आपके घर की दीवार पर लगा हुआ है। क्या वह वास्तव में प्रभु यीशु मसीह को दर्शाता है? बाइबल में 1 कुरिन्थियों के 11 अध्याय के 14वें पद में हम इस प्रकार पढ़ते हैं, कि ''क्या स्वाभाविक रीति से तुम यह नहीं जानते, कि यदि पुरुष लम्बे बाल रखे तो यह उसके लिये अपमान है।'' पर दूसरी ओर जो लोग प्रभु यीशु मसीह के चित्र अपनी कल्पना से बनाते हैं, वे हमेशा प्रभु यीशु के बाल बड़े और लम्बे दिखाते हैं। सो ऐसी बातों से हम देखते हैं, कि किस प्रकार लोग आज परमेश्वर के वचन को ताक पर रखकर, मनुष्यों के बनाए रीति-रिवाजों को बाइबल के स्थान पर मान रहे हैं।

पर ऐसा नहीं है, कि लोग आज ही ऐसा कर रहे हैं। किन्तु, प्रभु यीशु के समय में भी इस प्रकार के बहुत से लोग थे। बाइबल में, मत्ती की पुस्तक के 15 अध्याय में हम इस प्रकार पढ़ते हैं :

''तब यरूशलेम से कितने फरीसी और शास्त्री यीशु के पास आकर कहने लगे, कि तेरे चेले पुननियों की रीतों को क्यों टालते हैं, कि बिना हाथ धोए रोटी खाते हैं? यीशु ने उनको उत्तर दिया कि तुम भी अपनी रीतों के कारण क्यों परमेश्वर की आज्ञा टालते हो?'' और यीशु ने उन से कहा, कि, ''हे कपटियों, यशायाह ने तुम्हारे विषय में यह भविष्वाणी ठीक ही की है। कि ये लोग होठों से तो मेरा आदर करते हैं, पर उनका मन मुझ से दूर रहता है। और ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं, क्योंकि मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं। और उसने लोगों को अपने पास बुलाकर उन से कहा, कि सुनो, और समझो। जो मुंह में जाता है, वह मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता, पर जो मुंह से निकलता है, वही मनुष्य को अशुद्ध करता है। तब चेलों ने आकर यीशु से कहा, कि क्या तू जानता है, कि फरीसियों ने यह बात सुनकर ठोकर खाई है? यीशु ने उनसे कहा, कि हर एक पौधा जो मेरे स्वर्गीय पिता ने नहीं लगाया है, उखाड़ा जाएगा। उनको जाने दो; वे अंधे मार्ग दिखाने वाले हैं. और अंधा यदि अंधे को मार्ग दिखाए, तो दोनों गड्ढे में गिर पड़ेंगे। यह सुनकर पतरस ने उससे कहा, यह दृष्टान्त

हमें समझा दे। यीशु ने कहा, क्या तुम भी अब तक नासमझ हो? क्या नहीं समझते, कि जो कुछ मुंह में जाता है, वह पेट में पड़कर संडास में निकल जाता है? पर जो कुछ मुंह से निकलता है, वह मन से निकलता है, और वही मनुष्य को अशुद्ध करता है। क्योंकि कुचिन्ता, हत्या, परस्त्रीगमन, व्यभिचार, चोरी, झूठी गवाही और निंदा मन ही से निकलते हैं, और ये ही वस्तुएं मनुष्य को अशुद्ध करती है, परन्तु हाथ बिना धोए भोजन करना मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता।''

यहां, प्रभु यीशु ने अपने अनुयायीयों को विशेष रूप से दो बातें सिखाई थीं, अर्थात् एक तो यह, कि मनुष्यों की विधियों पर बनाए रीति-रिवाजों को छोड़कर, कि यह नहीं खाना और वह नहीं छूना; या ऐसा करने से यह हो जाएगा और वैसा न करने से ऐसा हो जाएगा; हमें इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि क्या हमारे मन शुद्ध है या नहीं क्योंकि हमारे जीवन का मूल स्रोत हमारा मन है। क्योंकि, धन्य हैं वे जिनके मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे, प्रभु ने कहा था, परमेश्वर को देखेंगे। (मत्ती 5:9)। प्रत्येक बुरे कार्य और बुरी बात का संबंध मनुष्य के मन से है। क्योंकि जो मन में उत्पन्न होता है, वही बाहर आता है। इसलिये, यदि हम अपने मन में परमेश्वर को शिक्षाओं को उसके वचन को बसने देंगे, तो हमारी बात-चीत, हमारे व्यवहार, हमारा रहन-सहन और हमारे चरित्र परमेश्वर की महिमा के योग्य ठहरेंगे। जैसा कि प्रभु यीशु ने सिखाया था, कि तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने ऐसे चमके, कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर, तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में हैं, बड़ाई करें।

और दूसरी बात इसी संबंध में, प्रभु यीशु ने यह सिखाई थी, कि जिन बातों की आज्ञा परमेश्वर ने नहीं दी है; अर्थात जिन बातों के बारे में उसके वचन की पुस्तक बाइबल में हमें नहीं मिलता, वे बातें ऐसे पौधों के समान हैं जिन्हें उखाड़ फेंका जाएगा। क्योंकि उन्हें परमेश्वर ने नहीं लगाया है। इसलिये, हम सब का यह कर्त्तव्य है कि हम परमेश्वर के वचन को सुने, उसे पढ़ें, उस पर ध्यान दें, और परमेश्वर की इच्छा को जानकर उस पर चलें। क्योंकि यदि हम मनुष्यों के रीति-रिवाजों पर चलकर अपने धर्म के कार्य कर रहे हैं, तो हम परमेश्वर की इच्छा पूरी नहीं कर रहे हैं। किन्तु तौभी यह एक सच्चाई है, कि अधिकतर लोग आज परमेश्वर के वचन को न मानकर, अपने-अपने ''चर्च'' या ''मिशन'' और अपने पुरखाओं की रीतियों पर चल रहे हैं। जैसे कि मैंने आरंभ में कहा था, कि लोग छोटे-छोटे बच्चों का बपतिस्मा करवाते है; और साल में एक दो त्यौहार मनाते हैं, जिनका बाइबल में कही वर्णन तक भी नहीं है; और ऐसे ही मनुष्यों की ही बनाई कुछ अन्य विधियों का पालन करते हैं। और ऐसा करके वे सोचते हैं कि वे यीशु मसीह के अनुयायी हैं। पर यीशु ने कहा था, कि ये लोग होठों से तो मेरा आदर करते हैं, पर इनका मन मुझ से बहुत दूर है।

प्रभु यीशु ने सिखाया था, कि परमेश्वर के सच्चे भक्त उसकी अराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे। क्योंकि परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसकी अराधना करने वाले आत्मा और सच्चाई से उसकी आराधना करें। आत्मा से, अर्थात् मन से भीतर से। और सच्चाई से, अर्थात परमेश्वर के वचन के अनुसार, क्योंकि परमेश्वर का वचन सत्य है। (यूहन्ना 17:17)।

इसलिये, मेरा आप से निवेदन है, और मेरा आप से आग्रह है, कि आप उन बातों की जांच करें जिन्हें आप परमेश्वर की इच्छा समझकर मानते चले आ रहे हैं। क्योंकि कहीं ऐसा न हो, जैसा कि प्रभु यीशु ने कहा था, कि यदि एक अंधा अंधे का मार्ग दर्शन करेगा तो दोनों की गड्ढे में गिर पड़ेंगे।

परमेश्वर ने हमें अपनी सम्पूर्ण इच्छा लिखवाकर दी है। उसने हमें बताया है, कि हम सब का यह कर्त्तव्य है कि हम उसकी इच्छा को वैसे ही मानें जैसे कि वह चाहता है। उसमें न तो कुछ जोड़ें, न उसमें से कुछ घटाएं और न उसमें कुछ बदलाव करे। और यदि हम परमेश्वर और उसके वचन का आदर करते हैं, तो हम वास्तव में ऐसा ही करेंगे।

अपने जीवन में अच्छे फल लाना

जे. सी. चोट

अपने इस पाठ में हम यह देखेंगे कि अपने जीवनों में हमें फल लाने की अवश्यकता है। यीशु ने दाखलता तथा डालियों का उदाहरण देकर कहा था, ''सच्ची दाखलता मैं हूं; और मेरा पिता किसान है। जो डाली मुझे में है और नहीं फलती उसे वह काट डालता है और जो फलती है उसे वह छांटता है ताकि और फले। तुम तो उस वचन के कारण जो मैंने तुम से कहा है शुद्ध हो। तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम में जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे, तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते। मै। दाखलता हूं तुम डालिया हो, जो मुझ में बना रहता है और मैं उसमें वह बहुत फल लाता है, क्योंकि मुझसे अलग होकर तुम फल नहीं सकते। यदि कोई मुझ में बना न रहे, तो वह डाली की नाई फेंक दिया जाता है, और सूख जाता है; और लोग उन्हें बटोर कर आग में झोंक देते हैं, और वे जल जाती है। यदि तुम मुझ में बने रहो और मेरी बातें तुम में बनी रहें तो जो चाहो मागो वह तुम्हारे लिये हो जाएगा। मेरे पिता की महिमा इसी से होती है, कि तुम बहुत सा फल लाओ, तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे। (यूहन्ना 15:1-8)।

इस कहानी में दाखलता का अर्थ है यीशु तथा उसके लोग यानि उसकी कलीसिया। जो डालियां है वे यीशु के पीछे चलने वाले है। मसीही लोग डालियो की तरह हैं। दाखलता में जीवन है इसलिये दाखलता से जुड़े रहना आवश्यक है। यदि हम यीशु के साथ जुड़े हुए नहीं हैं तो उसकी कलीसिया में भी नहीं हैं। हम खोए हुए हैं और यदि हम उसकी आज्ञा को नहीं मानते तब हम अनन्तकाल तक खो जाएंगे। इसलिये जब तक हम इस पृथ्वी पर जीवित हैं हमें उसकी आज्ञाओं का पालन करना चाहिए। परन्तु कोई व्यक्ति किस प्रकार से प्रभु यीशु में आ सकता है? इसके लिये केवल एक मार्ग है। और वो है प्रभु में विश्वास करना, अपने पापों से मन फिराना, यीशु को परमेश्वर का पुत्र

स्वीकार करना तथा जल में डूब का बपतिस्मा लेना। (मरकुस 16:16 प्रेरितों 2:38)। प्रेरित पौलुस कहता है कि बपतिस्मा हमें प्रभु और उसकी कलीसिया में मिलाता है। (रोमियों 6:3-4; गल. 3:26-27)। परन्तु उनका क्या जो दाखलता या यीशु के साथ जुड़े हुए हैं? उनके लिये प्रभु कहता है कि वे फल लायें। केवल फल नहीं बल्कि बहुत सारा फल लाये। उनका क्या होगा जो अपने जीवनों में फल नहीं लाते? प्रभु कहता है कि वे आग में या नर्क में झोंके जाएंगे। अर्थात वे खोकर अनन्त जीवन से वंचित हो जाएंगे। बपतिस्मा हमें देह के अन्दर मिला देता है। प्रभु चाहता है कि हम उसके लिये फल लाये और अधिक फल लायें।

एक और स्थान पर यीशु ने कहा था, ''सकेत फाटक से प्रवेश करो, क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और चाकल है'' वह मार्ग जो, विनाश को पहुंचाता है; और बहुतेरे हैं जो उससे प्रवेश करते हैं। क्योंकि संकेत है वह फाटक और संकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है, और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं। झूठे भविष्वक्ताओं से सावधान रहो जो भेड़ों के भेष में तुम्हारे पास आते है? परन्तु अन्तर में फाड़ने वाले भेड़िये हैं। उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे, क्या लोग झाड़ियों से अंगूर वा ऊंटकरों से अंजीर तोड़ते हैं? इसी प्रकार हर एक अच्छा पेड अच्छा फल लाता है और निकम्मा पेड़ बुरे फल लाता है। अच्छा पेड़ बुरा फल नहीं ला सकता है। और जो जो पेड़ अच्छा फल नही लाता वह काटा और आग में डाला जाता है। उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे। (मत्ती 7:13-20)। यीशु के अनुसार फल से पता लग जाता है कि कौन सा व्यक्ति कैसा है और किसका दिल अच्छा है और वह फल लाता है? जो पेड़ अच्छा फल लाता है वो और फलेगा और जो बुरा फल लाता है वह आग में नाश होगा। परन्तु सवाल यह है कि आप कौन सा फल ला रहे हैं?

कुलुस्सियो के 3 अध्याय में प्रेरित पौलुस बताता है कि पुराने मनुष्यत्व को कैसे उतारा जा सकता है? और मसीह को कैसे पहिना जा सकता है? और मसीह में धार्मिकता का नया मनुष्यत्व कैसे पहिना जाता है? प्रेरित कहता है, ''सो जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो जहां मसीह वर्तमान है और परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठा है। पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ। क्योंकि तुम तो मर गए और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है। जब मसीह जो हमारा जीवन है प्रगट होगा, तब तुम भी उसके साथ महिमा सहित प्रगट किए जाआगे।'' (कुलु. 3:1-4)। यहां पौलुस यह कह रहा है कि जिन्होंने सुसमाचार को मानकर बपतिस्मा लिया है वे बपतिस्मे की कब्र से बाहर आकर एक नये जीवन की सी चाल चलने लगे है (रोमियों 6:3-4)। यह सब होने के पश्चात् हम मसीहीयों को अपने मनों को स्वर्गीय वस्तुओं पर लगाना है।

फिर पौलुस कहता है ''इसलिये अपने उन अंगों को मार डालो, जो पृथ्वी पर है, अर्थात व्यभिचार अशुद्धता दुष्कामना बुरी लालसा और लोभ जो मूर्ति पूजा के बराबर है इन्हीं के कारण परमेश्वर का प्रकोप आज्ञा न मानने वालों पर पड़ता है। और तुम भी, जब भी जब इन बुराईयों में जीवन बिताते थे, तो इन्हीं के अनुसार चलते थे। पर अब तुम भी इन सब को अर्थात क्रोध रोष बैरभाव निंदा और मुंह से गालियां बकना यह सब

बातें छोड़ दो। एक दूसरे से झूठ मत बोलो, क्योंकि तुमने पुराने मनुष्यत्व को उसके कामों समेत उतार डाला है। और नए मनुष्यत्व को पहिन लिया है जो अपने सृजनहार के स्वरूप के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने के लिये नया बनता जाता है। (कुलु. 3:5-10)। यहां हम देखते हैं कि पहले वे सब प्रकार की बुराईयों में फंसे हुए थे परन्तु अब उन्होंने पुराने जीवन को उतारकर नया जीवन पहन लिया था। अब वे मसीह में नये बन गये थे तथा उन्हें अपने जीवन में अच्छे फल लाने थे।

वे अच्छे फल यह थे जिनके विषय में पौलुस कहता है ''इसलिये परमेश्वर के चुने हुओं की नाईं जो पवित्र और प्रिय है, बड़ी करूणा और भलाई और दीनता और नम्रता ओर सहनशीलता धारण करो। और यदि किसी को किसी पर दोष देने का कोई कारण हो तो एक दूसरे की सह लो और एक दूसरे के अपराध क्षमा करो, जैसे प्रभु ने तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी करो। और इन सबके ऊपर प्रेम को जो सिद्धता का कटिबंध है बान्ध लो। (कुल. 3:12-14)। अच्छे व्यवहार के द्वारा अच्छे फल उत्पन्न होते हैं।

फिर हम गलातियों के 5 अध्याय में आते हैं और यहां पौलुस 22-25 पदों में आत्मा के फलों के विषय में बात करता है। वह इस प्रकार कहता है ''पर आत्मा का फल प्रेम, आनंद, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम हैं; ऐसे-ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं। और जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने शरीर को उसकी लालसाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है। यदि आत्मा के द्वारा जीवित है तो आत्मा के अनुसार चलें भी। यदि हम मसीह में हैं तो हम आत्मा के फलों को अपने भीतर उत्पन्न करेंगे। यदि हम सच्चे मसीह हैं तो हम इन अच्छी बातों को अपने जीवनों में लेकर चलेंगे। कोई आपको बुरा नहीं कहेगा यदि आपके जीवन में अच्छे फल हैं। कोई भी आपको नुकसान नहीं पहुंचायेगा क्योंकि आप एक अच्छा जीवन व्यतित कर रहे हैं। एक मसीही होना कितनी अच्छी बात है।

आपसे मेरा एक प्रश्न है, कि क्या आप एक मसीही है? यदि नहीं तो यीशु में विश्वास कीजिये, पापों से अपना मन फिराये तथा यीशु को परमेश्वर का पुत्र अंगीकार करके बपतिस्मा लीजिये तब आप एक मसीही होंगे तथा आपको अपने जीवन में आत्मिक फल लाने होंगे।

मसीही लोगों के लिए उपवास रखना आवश्यक है या यह उनकी अपनी इच्छा पर है?

यीशु ने कहीं पर भी अपने चेलों को उपवास रखने की आज्ञा नहीं दी थी। इसका अर्थ यह हुआ कि उपवास रखना किसी की अपनी व्यक्तिगत इच्छा पर निर्भर करता है। बेशक मत्ती 9:14-18 (मत्ती 9:14-17 और समानांतर वचन लूका 5:33-39) में यीशु के शब्दों का अर्थ यही प्रतीत होता है कि कुछ परिस्थतियों में मसीही लोग उपवास रखेंगे।

यूहन्ना के चेले यीशु से इसका कारण पूछने के लिए आए कि फरीसी और वे तो उपवास रखते थे परन्तु यीशु के चेले उपवास क्यों नहीं रखते? उसने उत्तर दिया, ''क्या बराती, जब तक दूल्हा उनके साथ है, शोक कर सकते हैं? पर वे दिन आएंगे जब दूल्हा उनसे अलग किया जाएगा, उस समय वे उपवास करेंगे'' (मत्ती 9:15)। यीशु ने यहां संकेत दिया कि (1) उपवास का संबंध शोक से है और (2) जब यीशु अपने चेलों के साथ था तो यह उनके लिए शोक करने का समय नहीं था।

''परन्तु यीशु ने जोर देकर कहा कि वे दिन आएंगे जब दूल्हा उनसे अलग किया जाएगा, उस समय वे उपवास करेंगे।'' दूल्हा उनके साथ ही है, इसका अर्थ स्पष्ट है कि जब तक यीशु अपनी सेवकाई (निजी) के दौरान शारीरिक रूप में उनके साथ था। इस लिए ''जब दूल्हा उनसे अलग किया जाएगा'' का अर्थ अवश्य ही उसके स्वर्ग पर जाने के बाद का समय होना था। यदि ऐसा है तो यीशु उन्हें कह रहा था कि उसके चेलों के लिए उपवास रखने का यही समय होना था।

बरनबास और शाऊल को मिशनरी बनाकर भेजे जाने के समय अंताकिया में कलीसिया ने उपवास रखा था (प्रेरितों 13:2, 3), और अपनी पहली मिशनरी यात्रा के दौरान पौलुस द्वारा आरंभ की गई कलीसियाओं ने ऐल्डरों की नियुक्ति करने के समय उपवास रखकर प्रार्थना की थी (प्रेरितों 14:23)।

उपवास रखना कई बार दुख का कारण भी हो सकता है (2 शमूएल 1:12; 12:16; 21-23; न हेम्याह 1:3-4)। उपवास कई बार उदासी का प्रदर्शन भी है जो ''पश्चाताप उत्पन्न करता है'' (2 कुरिन्थियों 7:10; 1 शमूएल 7:6; देखें योना 3:4-10)।

पहाड़ी उपदेश में यीशु ने उपवास से संबंधित निर्देश दिए थे (मत्ती 6:16-18)। यहां उपवास रखने की कोई आज्ञा नहीं है। यीशु अपने चेलों को सिखा रहा था कि उसके राज्य में उनके जीवन और आराधना कैसी होनी चाहिए। जब उपवास रखा जाए तो यह अपने तौर पर ही रखा जाए।

उपवास बहुत लम्बा नहीं हो सकता और हर बात में भी नहीं हो सकता। कुछ उपवासों में भोजन और पानी दोनों का ही त्याग करना हो सकता है। जबकि कुछ उपवासों में केवल भोजन का त्याग करना होता है। प्रायश्चित वाले दिन उपवास ''संध्या तक'' यानी चौबीस घण्टे का होता था। फरीसी लोग सप्ताह में दो बार सुबह से लेकर शाम तक उपवास रखते थे। तीन दिन का उपवास और सात दिन का उपवास रखा जाना आम बात थी। इसके अलावा मूसा (निर्गमन 34:28), एलिय्याह (1 राजाओं 19:8) और यीशु (मत्ती 4:2) ने चालीस दिन और चालीस रात का उपवास रखा था।

क्या उपवास रखने से एक मसीही व्यक्ति को अधिक आत्मिक शक्ति और मजबूती मिलती है? हो सकता है। उपवास रखने का एक कारण यह भी हो सकता है कि भोजन का त्याग और जो समय खाने में लगाया जाना था उसे प्रार्थना करने और बाइबल अध्ययन में लगाना। जो धन भोजन पर खर्च किया जाना था उसे किसी भले कार्य को करने के लिए भी खर्चा जा सकता है। उपवास रखने के समय जब भूखा पेट दिमाग को कुछ याद

दिलाता है तो यह समझना आवश्यक है कि यह प्रार्थना करने को याद दिला रहा है। उपवास रखना विशेष तौर पर तब अधिक लाभदायक हो सकता है जब कोई आवश्यक विनती प्रार्थना में परमेश्वर के सामने करनी हो।

बेशक भोजन का त्याग करने का अर्थ नहीं है कि उपवास रखने वाले की हर मांग पूरी हो जाए। उपवास से संबंधित जैसे आपके विचार और काम हैं, आपको उसी के अनुसार उसका उत्तर मिलेगा।

यशायाह ने कहा था कि उसके समय के लोग उपवास रखते हैं, परन्तु उपवास रखकर वे निर्धनों से छल करते, लड़ाई झगड़ों में लगे रहते और हर प्रकार की बुराई करते थे। जो उपवास परमेश्वर चाहता है, यशायाह ने बातया कि वह यह है कि ''अन्याय से बनाए हुए दासों और अंधेरे सहने वालों का जुआ तोड़कर उनको छुड़ा लेना, अपनी रोटी भूखों को बांट देना, अनाथ और मारे-मारे फिरते हुओं को अपने घर ले आना, और अपने जाति भाइयों को अपने से न छिपाना'' (यशायाह 58:3-9)।

यदि कोई मसीही व्यक्ति दुख में या परेशानी में है तो उसके लिए उपवास रखना स्वाभाविक बात है। यदि उपवास सोच-समझकर आत्मिक लाभ के लिए रखा जाता है तो आपकी प्रार्थना के लिए यह एक सहायक का काम कर सकता है। उपवास जब भी रखें, लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए न हो।

"तू जो स्वर्ग में है"

ह्यूगो मेकोर्ड

परमेश्वर का ऐलान है कि "आकाश मेरा सिंहासन और पृथ्वी मेरे चरणों की चौकी है" (यशायाह 66:1)। जिस धरती पर हम इस समय रह रहे हैं वह परमेश्वर के पांवों की चौकी ही है, और हम उसके सामने टिड्डियों की तरह है (यशायाह 40:22)। प्राकृतिक, अर्थात साधारण मनुष्य परमेश्वर की बातों के गहरे अर्थ को नहीं समझ सकता (1 कुरिन्थियों 2:10, 14)। पर हम यीशु की इस बात को पूरी तरह नहीं समझ सकते जिसमें उसने कहा था, "हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है" (मत्ती 6:9)। जो कुछ वह है, और होगा उसकी अधिकतर बातें बताई नहीं गई है (1 यूहन्ना 3:2)

फिर भी, परमेश्वर की कुछ बातें हम पर आत्मा की प्रेरणा प्राप्त लोगों के द्वारा प्रकट की गई है। जिसके परिणामस्वरूप, पवित्र शास्त्र की शिक्षाओं के द्वारा हमें संसार के विषय में पूरी तरह से अज्ञानता में नहीं रखा गया। परमेश्वर के निवास अर्थात स्वर्ग के बारे में कुछ ज्ञान प्राप्त कर, हम आने वाले संसार की शक्तियों का अनुभव कर सकते हैं (इब्रानियों 6:5)।

अलग-अलग आकाश (स्वर्ग)

बाइबल कई अलग-अलग आकाशों की बात करती है, परन्तु "सात आकाशों" की बात मानवीय साहित्य में ही मिलती है। पवित्र शास्त्र में उल्लिखित एक आकाश वह है

जहां पक्षी उड़ते हैं: "जल जीवित प्राणियों से बहुत ही भर जाए, और पक्षी पृथ्वी के ऊपर आकाश के अन्तर में उड़ें" (उत्पत्ति 1:20)। पक्षियों, बादलों और वायु के आगे के आकाश में असंख्य तारों, सूर्य, चंद्रमा और ग्रहों का निवास है। पवित्र शास्त्र में उस क्षेत्र को भी आकाश कहा गया है, "दिन को रात से अलग करने के लिए आकाश के अन्तर में ज्योतियां हो" (उत्पत्ति 1:14)।

पक्षियों के आकाश को पहला और तारों के आकाश को दूसरा स्वर्ग कहा जाए या नहीं, मैं नहीं जानता। परन्तु परमेश्वर ने हमें तीसरे स्वर्ग जिसे स्वर्गलोक कहा गया है, से अनजान नहीं रखा है। उसी स्थान पर यीशु और क्रूस पर चढ़ने वाला डाकू गए थे (लूका 23:43), जैसे पौलुस भी गया (2 कुरिन्थियों 12:2, 4)। तीसरे आकाश से पौलुस और यीशु इस पृथ्वी पर लौट आए। बेशक वे स्वर्गलोक में तो गए थे, परन्तु वहां नहीं जहां पिता रहता है; क्योंकि तीसरे आकाश से होकर आने पर यीशु ने कहा था, "मैं अब तक पिता के पास ऊपर नहीं गया" (यूहन्ना 20:17)।

परमेश्वर के स्वर्ग का अस्तित्व

अविश्वासी लोग क्रोधित होकर कहते हैं कि खगोल शास्त्रियों को आकाश में परमेश्वर का सिंहासन नहीं मिला था, जो प्रमाणित करता है कि यह केवल एक कल्पना मात्र है। इसी छलावे से यह "प्रमाणित" करते हैं कि जीवन का आस्तित्व ही नहीं है, क्योंकि जीवन की भी न तो कोई परिभाषा दी जा सकती है और न ही उसे देखा जा सकता है। क्या स्वर्ग के अस्तित्व पर इसलिए संदेह करना उचित है कि नाशवान दूरबीनों उस अविनाशी परमेश्वर के निवास को ढूंढ़ने में असफल रहीं? यदि अभौतिक स्वर्ग उनकी सीमा में होता तो भी ये भौतिक लैंस उसे नहीं देख सकते थे।" परमेश्वर आत्मा है" (यूहन्ना 4:24); "आत्मा के हड्डियां मांस नहीं होता" (लूका 24:39), बल्कि वह "अदृश्य" (कुलुस्सियों 1:15) है।

फिर, खगोल शास्त्रियों द्वारा विशाल से विशालतम होते जा रहे संसार की निरंतर खोजों से चकित होकर, हम नाशवान मनुष्यों को विनम्र होकर कहना चाहिए, "हम तो चुप ही रहेंगे, क्योंकि पता नहीं कि दूरबीनों के आगे अभी और क्या है सारे भौतिक संसार के आगे की सब बातें उससे कहीं कम है।" अविश्वासी लोगों को न तो इतना घमंड करना चाहिए और न ही उन्हें अपने ही धोखे में फंसना चाहिए। परमेश्वर करे कि उनके मन भी अय्यूब की तरह विनम्र हो जाएं, "परन्तु मैंने तो जो नहीं समझता था वही कहा, अर्थात जो बातें मेरे लिए अधिक कठिन और मेरे समझ से बाहर थीं जिनको मैं जानता भी नहीं था। ....इसलिए ....मैं धूलि और राख में पश्चात्ताप करता हूं" (अय्यूब 42:3ख-6)।

यह दावा करना कि स्वर्ग का अस्तित्व नहीं है, न केवल यह दिखाता है कि हमें संसार का पूर्ण ज्ञान नहीं है, बल्कि वह उस ज्ञान को भी दिखाना है जो हमारे अस्तित्व के दायरे से बाहर है। वास्तव में, ऐसा दावा अपने आप ही सर्वज्ञता को मान लेता है। स्वर्ग के अस्तित्व से इंकार करने के लिए पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है, क्योंकि यदि एक ही बात हो जिसका मनुष्य को पता न हो, तो यह स्वर्ग का अस्तित्व हो सकता हैं फिर, स्वर्ग की वास्तविकता से इंकार करने के लिए किसी को सर्वव्यापक भी होना चाहिए, क्योंकि यदि एक भी ऐसा स्थान है जहां मनुष्य नहीं गया, तो वह स्वर्ग ही हो सकता है।

अविश्वासियों के दावों के बावजूद, अधिक प्रसन्न करने वाला और अधिक युक्तिसंगत, दाऊद का व्यवहार मिलता है:

> हे यहोवा, न तो मेरा मन गर्व से और न मेरी दृष्टि घमण्ड से भरी है;
> और जो बातें बड़ी और मेरे लिए अधिक कठिन है,
> उन में मैं काम नहीं रखता।
> निश्चय मैं ने अपने मन को शांत और चुप कर दिया है,
> जैसा दूध छुड़ाया हुआ लड़का अपनी मां की गोद में रहता है,
> वैसे ही दूध छुड़ाए हुए लड़के के समान मेरा मन भी रहता है
> (भजन संहिता 131:1, 2)।

अविश्वासियों का दावा है कि यह कहना कि यीशु "ऊपर" स्वर्ग में उठा लिया गया (प्रेरितों 1:9) का अर्थ है कि 12 घंटे बाद (पृथ्वी के घूमने के कारण) स्वर्ग "नीचे" हो जाएगा। इस कारण वे यीशु और बाइबल पर हंसते हैं। यदि परमेश्वर का निवास भौतिक भी होता, तो स्वर्ग एक ही समय हमारे निवास को पूरी तरह से ढंककर पृथ्वी की सभी दिशाओं में होता है। यह विश्वास रखकर एकमात्र सचमुच भला और समस्त संसार में ग्रहण किया जाने वाला व्यक्ति जानता था कि वह अपने मित्रों को पिता के घर ले जाने की प्रतिज्ञा करके क्या कह रहा था, उस महान शिक्षक के चरणों में बैठना इससे भी अधिक समझदारी है।

परमेश्वर का आकाश (स्वर्ग)

एक आकाश है जहां पर पिता रहता है, वहां यीशु को छोड़ "और कोई स्वर्ग पर नहीं चढ़ा" (यूहन्ना 3:13) जो स्वर्ग से नीचे आया और पिता के दाहिने हाथ बैठने के लिए फिर लौट गया है। सुलैमान ने परमेश्वर के रहने के स्थान को "सबसे ऊंचा स्वर्ग" कहा (1 राजा 8:27)। यशायाह नबी और प्रेरित यूहन्ना को उस भव्य निवास की झलक पाने का सुअवसर प्राप्त हुआ था, और आपको और मुझे वहां सदा-सदा तक रहने की अनुमति मिलेगी। आदर और महिमा पाकर प्रभु यशब पत्थर और मानिक की तरह सिंहासन पर बैठता हे। उसके सिर पर पन्ने की तरह एक मेघ धनुष है। लाखों स्वर्गदूत उसकी स्तुति करते हैं। आंखें और पांव ढके हुए सिराफीम (साराप) सिंहासन के ऊपर इधर-उधर घूमते हुए एक-दूसरे से कह रहे हैं, "सेनाओं का यहोवा पवित्र, पवित्र है. सारी पृथ्वी उसके तेज से भरपूर है" (यशायाह 6:3)।

पृथ्वी पर रहते हुए, यीशु परमेश्वर के स्वर्ग में रहने को स्मरण करते हुए लौटने को तड़पता था, "अब हे पिता, तू अपने साथ मेरी महिमा उस महिमा से कर जो जगत के होने से पहिले, मेरे तेरे साथ थी" (यूहन्ना 17:5)।

यदि सबसे ऊंचे स्वर्ग जैसा कोई सर्वोत्तम तेजोमय स्थान है, मनुष्यों तथा स्वर्गदूतों पर शासन वही से होता है। वहां के और पृथ्वी के प्रत्येक जीव को चाहिए कि उसको चुनें जो महिमा में अपने सिंहासन पर बैठा है। "परन्तु यहोवा अपने पवित्र मंदिर में है; समस्त पृथ्वी उसके सामने शांत रहे" (हबक्कूक 2:20)।

इसलिए मानवीय जीवों को तलाक,नशा, बपतिस्मा, नाचरंग, या किसी ऐसे विषय पर अपने विचार देने के लिए सम्पत्ति बनाने का कोई अधिकार नहीं है। "मनुष्य ...के डग उसके अधीन नहीं है" (यिर्मयाह 10:23ख) क्योंकि पापी होने के कारण वह अपने सही

मार्ग पर नहीं चलता है। सभाएं या परिषद उनकी अपनी ही निर्बलताओं तथा पापों से ऊंची नहीं हो सकती, इसलिए मनुष्य परमेश्वर के मंदिर में बैठकर परमेश्वर की तरह बात नहीं कर सकता। किसी व्यक्ति का व्यक्तियों के समूह को हमारे लिए धार्मिक नियम बनाने का कोई अधिकार नहीं है।

कई बार प्रचारक मसीही लोगों को उत्साहित करते हैं कि "जो कलीसिया अच्छी लगे उसी में शामिल हो जाओ।" बेशक वे न चाहते हो, परन्तु वास्तव में वे सर्वोच्च पिता को गद्दी से उतार रहे होते हैं। वे चेलों की प्रार्थना के उस भाग "स्वर्ग में" को व्यक्त करते हैं। क्या परमेश्वर ने यह नहीं चुना कि मसीही लोग किस कलीसिया में शामिल हो? फिर, न चाहते हुए भी ऐसे प्रचारक पापी मनुष्यों को तो ऊंचा उठाते हैं जबकि उसे ही निकाल देते हैं जो बचाने के योग्य है।

जब मसीही लोगों से यह कहा जाता है कि वे "अपनी पसंद का" बपतिस्मा लें, चाहे वह छिड़काव का हो, या उंडेलने का, या डुबकी का, तो कई गलतियां होती हैं। सबसे अधिक बुनियादी गलती यह सोचकर कि बपतिस्मा कैसे भी दिया जाए इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, बड़ी भूल की जाती है। जब तक मेनोनाइट लोगों की तरह बपतिस्मा लेने वाले को आगे झुकाने या दूसरे बहुत से सम्प्रदायों की तरह पीछे को झुकाने की बात पर विचार नहीं किया जाता, तब तक बपतिस्मे का "ढंग" इस शब्द का अप्रयोग ही है।

रॉबर्ट रिचर्डसन के अनुसार, पहली बार बपतिस्मा देते समय थॉमस कैम्पबैल ने "तालाब के किनारे निकली एक जड़ पर खड़े होकर उनके (बपतिस्मा लेने वालों के) सिर तब तक पानी में रखे जब तक कि वे उस तरल कब्र में गाड़े नहीं गए।" पानी में खड़े होकर बपतिसमा लेने वालों में से एक गंभीर व्यक्ति ने एन.बी. आर्डमैन से पूछ लिया "मैं बैठकर बपतिस्मा क्यों नहीं ले सकता?" गुप्त निकोल्स एक ऐसे प्रचारक के बारे में बताता है जिसने बपतिस्मा लेने वाले को सीधा नीचे दबाने पर जोर दिया क्योंकि दारोगा को "तुरन्त" बपतिसमा दिया गया था (प्रेरितों 16:33)। यदि ये घटनाएं बपतिस्मे की "विधि" नहीं है, तो फिर कोई भी ढंग नहीं है। परमेश्वर ने बपतिसमे की आज्ञा दी है, जोकि डुबकी का ही है।

लोगों को "अपनी पसंद" का बपतिस्मा देने की सूचना यहां हमारी मुख्य चिंता है। सच्चाई तो यह है, कि पापी मनुष्य अंधेरे में है और वह नहीं जातना कि किस ओर जाना है। जिसने बपतिस्मे की आज्ञा दी वह पाप रहित था और जब भी उस प्रकाश में वास करता है जहां कोई मनुष्य नहीं पहुंच सकता, इसलिए मनुष्य बपतिस्मे की "विधि" बनाने का निर्णय लेने का प्रयास करके गलत करता है।

इसलिए, यह प्रार्थना करके कि "तू जो स्वर्ग में है, "मैं यह कह रहा हूं कि सम्पूर्ण अधिकार परमेश्वर के पास है। ऐसी प्रार्थना करके मैं न केवल यह मानता हूं कि परमेश्वर के पास सर्वोच्च शक्ति है और केवल वही सर्वशक्ति का मालिक है, बल्कि मैं उसकी शक्तियों को भी मानता हूं; और मैं परमेश्वर की उसके स्वर्ग में होने के कारण महिमा करता हूं। यहोशापात को उसकी सतुति करते सुनिए:

हे हमारे पितरों के परमेश्वर यहोवा, क्या तू स्वर्ग में परमेश्वर नहीं है? और क्या तू जाति के सब राज्यों के ऊपर प्रभुत्ता नहीं करता? और क्या तेरे हाथ में ऐसा बल ओर पराक्रम नहीं है कि तेरा सामना कोई नहीं कर सकता? (2 इतिहास 20:6)।

राजा सुलैमान द्वारा नाशवान मनुष्य को अपनी हर बात सावधानी से कहने का सुझाव

देने का एक कारण था क्योंकि "परमेश्वर स्वर्ग में है और तू पृथ्वी पर है; इसलिए तेरे वचन थोड़े ही हो" (सभोपदेशक 5:2)।

स्वर्ग में, पृथ्वी पर, और पृथ्वी के नीचे, कल आज और हमेशा उसके अधिकार को मानने के अलावा, मैं "तू जो स्वर्ग में है" प्रार्थना करते हुए उस परमप्रधान की एक अन्य विशेषता की घोषणा करता हूं। मेरे कहने का भाव यह है कि अमेरिका हो या चीन, दिन हो या रात हर जगह हर समय, उसकी आंखें मनुष्य के पुत्रों पर लगी रहती हैं (भजन 11:34)। वह यह सब कैसे कर सकता है मुझे इसकी समझ नहीं है; ऐसा ज्ञान मेरे लिए बहुत ही अद्‌भुत है। यह बहुत ही ऊंचा और मेरी पहुंच से बहुत दूर है (भजन 139:16)। परमेश्वर मेरे बैठने, मेरे लेटने, और मेरे चलने के मार्ग को जानता है। बहुत पहले से वह मेरी सोच को जानता है। मेरे जन्म लेने से पहले ही, मेरे लिए उसने योजनाएं बना ली थी: "तेरी आंखों ने मेरे बेडौल तत्व को देखा; और मेरे सब अंग जो दिन-दिन बनते जाते थे वे रचे जाने से पहिले तेरी पुस्तक में लिखे हुए थे" (भजन संहिता 139:16)।

सब जगह देखने वाली आंख जानती है कि जब कोई कैन खेतों में उठकर किसी निर्दोश की हत्या करेगा। वह बाबुल देशके सुन्दर ओढ़ने, चोगे चांदी, के किस्सके, शेकेल और सोने का ईंट चुराने वाले आकलन को देखता है। हर जगह विद्यमान और सब कुछ जानने वाले स्वर्ग के उस निवासी ने एक बूढ़े और अंधे नबी को एक धोखा देने वाले का अभिवादन करने के योग्य बनाया, "'हे यारोबाम की स्त्री। भीतर आ, तू अपने को क्यों दूसरी स्त्री बनाती है?" (1 राजा 14:6)। जब चुपके से आए गेहाजी ने कपड़े और चांदी पाने के लिए झूठी कहानी गढ़ी, तो स्वर्ग से देखने वाले ने इस अविश्वासी सेवक पर हर समय नजर रखने की एलिशा नबी को शक्ति दी, "...तब वह पूरा हाल मुझे मालूम था..." (2 राजा 5:26)।

हर जगह देखने वाली उसकी आंख के कारण दुष्ट लोगों को भय से कांपना चाहिए, और भले लोगों को उससे बड़ी सांत्वना मिलनी चाहिए। वही आंख जो बुराई को देखती है हर एक भले काम को भी देखती है। परमेश्वर धर्मी है; जब आप मुसीबत में फंसे लोगों की सेवा करते हैं तो वह आपके विश्वास और प्रेम से किए कार्य को भूलते नहीं है। न केवल उसकी आंखें किसी बालक पर हुए अत्याचार को ही देखती है, बल्कि वह अपने छोटे बच्चों पर किए जाने वाले करुणा के हर काम को भी देखता है।

स्वर्ग से परमेश्वर द्वारा ध्यान रखना

यह विचार कितना मूल्यवान है कि स्वर्ग में अपने सिंहासन पर बैठे परमेश्वर की नजर में आने व प्रिय बनने के लिए जरूरी नहीं कि आप भलाई के बड़े-बड़े काम करे। यदि आप किसी को ठण्डे पानी का गिलास ही पिला सकते हैं, तो अवश्य पिलाएं, आपको उसका प्रतिफल अवश्य मिलेगा। हो सकता है कि किसी जरूरतमंद परिवार के द्वार पर आटे की थैली रखते हुए आपको कोई मनुष्य न देखे, परन्तु आपका पिता जो गुप्त में देखता है आपको ब्याज समेत उसे लौटा देगा।

ऐसा भी समय आया होगा जब आप अपने पड़ोसी के साथ स्वर्ग से मिले सुसमाचार की बात करके उसे शुद्ध करने वाले लहू के फव्वारे में धोने के लिए ले गए हो। हो सकता है कि प्रचारक ने या किसी अन्य ने आपकी तारीफ न की हो, परन्तु अपने अपना काम बदले में कुछ पाने के लिए नहीं किया। यीशु को ग्रहण करके आप अपने पापों में

स्वतंत्र होकर धार्मिकता का आनन्द ले रहे थे, और चाहते थे कि ऐसे शानदार और सदा तक रहने वाले अनुभवों को अपने पड़ोसी के साथ भी बांटे। सब कुछ देखने वाली आंख ने आपके द्वारा किए गए विनम्र प्रयास से अपने पड़ोसी को समझाने के उत्साह को देखा, एक पापी को बदलने के आपके प्रयास को इसने आपके हृदय में झांका। परमेश्वर चाहता है कि आप आकाश के तारों की तरह चमके, क्योंकि उसने वायदा किया है कि "जो बहुतों को धर्मी बनाते हैं, वे सर्वदा तारों की नाई प्रकाशमान रहेंगे" (दानिय्येल 12:3)।

यह विचार कितना तसल्ली देने वाला और विश्वास को बढ़ाने वाला है कि परमेश्वर सब कुछ देख रहा है। लोग आपके बारे में कुछ भी कहें या आपके साथ कैसा भी बर्ताव करें, सब कुछ देखने वाले के पास सच्चे मन से प्रार्थना करके, आप बड़े वायदे को पा सकते है, "यहोवा की दृष्टि सारी पृथ्वी पर इसलिए फिरती रहती है कि जिनका मन उसकी ओर निष्कपट रहता है, उनकी सहायता में सब अपना सामर्थ दिखाएं" (2 इतिहास 16:9)।

स्वर्ग निकट ही है

यह तथ्य कि प्रभु बहुत ऊंचे पर स्वर्ग में उठाया गया, हमारे परमेश्वर को दूर का परमेश्वर नहीं बना देता। यह तो सत्य है कि वह सबसे ऊपर है, परन्तु वह सब में और सबके बीच में ही है (इफिसियों 4:6)। वह न केवल स्वर्ग में ही शासन करता है, बल्कि जो लोग मसीह के है, उनके मनों में भी रहता है। आप सब सुसमाचार की आज्ञा को मानते हैं तो ऊपर से अतिथि आते हैं। आपके बपतिस्मा लेने के समय, परमेश्वर दान के रूप में और आपके अनन्त छुटकारे की गारंटी के रूप में आत्मा को भेजता है (प्रेरितों 2:38, 5:32; गलतियों 4:6; इफिसियों 1:13, 14)। पवित्र आत्मा के अतिरिक्त (1 कुरिन्थियों 6:19) दो अन्य परमप्रिय लोग भी आते हैं, "मेरा पिता उससे प्रेम रखेगा, और हम उसके पास आएगे, और उसके साथ वास करेंगे" (यूहन्ना 14:23)।

यदि आप मुझसे पूछें कि अपने मंदिर में बैठने वाला (भजन 11:4) स्वर्ग का परमेश्वर आप में भी कैसे रह सकता है, तो मैं केवल इतना ही कह सकता हूं, "मुझे नहीं पता। मैं तो केवल इतना ही जानता हूं कि वह मुझ में है।" परमेश्वर विश्वासयोग्य है (2 तीमुथियुस 2:13), और पवित्र शास्त्र गलत नहीं हो सकता (यूहन्ना 10:35)। मसीह स्वर्ग में पिता के दाहिने हाथ बैठा है (1 पतरस 3:22), परन्तु प्रभु के प्रत्येक दिन वह अपने पवित्र लोगों (मसीहियों) के साथ पृथ्वी पर प्रभु भोज में शामिल होता है (मत्ती 26:29)। उसी समय वह उसके नाम में किसी छोटी सी कुटिया में एकत्रित हुए दो या तीन लोगों में महिमा पा सकता है (मत्ती 18:20)। पिता के महिमा पाए हुए पुत्र और भक्त लोगों में उसकी निकटता को शब्दों में वर्णित नहीं किया जा सकता, परन्तु वे बातें जो लम्बे समय से हम जानते हैं और उनके लिए धन्यवाद देते हैं, हमें आश्वासन देती है। यशायाह ने इस प्रकार से लिखा था:

क्योंकि जो महान और उत्तम और सदैव स्थिर रहता, और जिसका नाम पवित्र है, वह यों कहता है, मैं ऊंचे पर और पवित्र स्थान में निवास करता हूं, और उसके संग भी रहता हूं, जो खेदित और नम्र है कि, नम्र लोगों के हृदय और खेदित लोगों के मन को हर्षित करूं (यशायाह 57:15)।

जब भी प्रार्थना करें, तो अपने पिता से प्रार्थना करें जो स्वर्ग में है।

हमारा परमेश्वर सदाचारी है

जेम्स ई. प्रीस्ट

परमेश्वर के बारे में अब तक के अपने अध्ययन में हमने देखा है कि वह सर्वव्यापी, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सृजनात्मक और ऐतिहासिक है। हमने देखा कि उसके प्रत्येक गुण से हमारा जीवन प्रभावित होता है। वास्तव में, यदि वह परमेश्वर जिसका हम अध्ययन कर रहे हैं, न होता तो हमारा अस्तित्व भी न होता। "हम उसी में जीवित रहते, और चलते-फिरते, और स्थिर रहते हैं; ..." (प्रेरितों 17:28) हमारा परमेश्वर निकट, सामर्थी और समझ है। उसने हमारे लिए सब कुछ उपलब्ध कराया है और हमारी अगुआई करता है। इस सबके लिए और दूसरी सभी बातों के लिए हम सचमुच उसका धन्यवाद करते हैं।

परमेश्वर के एक गुण के बारे में जो हमारी भलाई के लिए निर्णायक है, हमने अभी तक विचार नहीं किया हैं। यदि परमेश्वर सदाचारी न होता तो जितने भी गुणों की हमने अब तक समीक्षा की है, वे सभी हमें अजीब और दुखद स्थिति में डाल देते। यह कहना अतिश्योक्ति नहीं है कि इस जीवन में यहां और अनन्तकाल में हमारी भलाई, परमेश्वर के सदाचारी होने के कारण ही है। इसलिए आइए उसके इस सर्वश्रेष्ठ गुण का ध्यान से अध्ययन करें।

सत्य की पुष्टि हुई

सदाचारी होने के लिए पूर्णतया पवित्र होना आवेश्यक है। पूर्ण तथा पवित्रता की स्थिति सदाचारी और आत्मिक रूप से सिद्ध होने से ही मिलती है। निस्संदेह केवल परमेश्वर के लिए ही ऐसा कहा जा सकता है। बाइबल पृथ्वी पर तथा स्वर्ग में परमेश्वर की पवित्रता की पुष्टि कई बार करती है। नीचे दिए गए उदाहरणों पर विचार करें।

अपने पुत्र के जन्म का पूर्व अनुमान लगाते मरियम के मुंह से निकला था, "...उस शक्तिमान ने मेरे लिए बड़े-बड़े काम किए हैं, उसका नाम पवित्र है" (लूका 1:49)।

प्रेरित यूहन्ना को स्वर्ग के दृश्य दिखाए, जाने पर, उसने परमेश्वर के सिंहासन को मनुष्यों और स्वर्गदूतों से घिरा हुआ पाया था। वे "जीवित प्राणी" बिना रूके गाये जा रहे थे, "पवित्र पवित्र, पवित्र प्रभु, परमेश्वर, सर्वशक्तिमान, जो था, और जो है, आने वाला है" (प्रकाशितवाक्य 4:8ख)। वे "जीवित प्राणी" सिंहासन पर बैठने वाले की महिमा तथा स्तुति गा रहे थे। उनके साथ वे चौबिस प्राचीन भी थे जो यह गाते हुए "कि हे हमारे प्रभु, और परमेश्वर, तू ही महिमा, और आदर, और सामर्थ के योग्य है; क्योंकि तू ही ने सब वस्तुएं सृजी और वे तेरी ही इच्छा से थी, और सृजी गई" (प्रकाशितवाक्य 4:9-11)। अनादि परमेश्वर की आराधना कर रहे थे। उनके "स्वर्गीय परिप्रेक्ष्य" से हम देखते हैं कि परमेश्वर संसार की सृष्टि से भी पहले पवित्र था। जिस प्रकार उसका स्वभाव सर्व-ज्ञानी और सर्वशक्तिमान होना है वैसे ही पवित्र होना भी उसका स्वभाव है।

पुन: "स्वर्गीय परिप्रेक्ष्य" उस समय सामने आया जब यशायाह नबी ने परमेश्वर को ऊंचे और महिमामय सिंहासन पर बैठे और सारापों को उसकी सेवा करते और यह पुकारते हुए देखा व सुनाा, "सेनाओं का यहोवा पवित्र, पवित्र है, सारी पृथ्वी उसके तेज से भरपुर है" (यशायाह 6:1-3)।

पृथ्वी पर तथा स्वर्ग में परमेश्वर की पवित्रता पर जोर देते ये दृश्य स्पष्ट रूप से उसकी सृष्टि से जुड़े हुए हैं, "सारी पृथ्वी उसके तेज से भरपुर है।" वह महिमा तथा स्तुति के योग्य है क्योंकि उसने सृष्टि की प्रत्येक वस्तु को रचा है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि उसकी सृष्टि पवित्रता के प्रकाशमण्डल से सुसज्जित है। ऊर्जा, सुन्दरता तथा तरतीब को देखकर सृष्टि में हमें एक नैतिक गुण मिलता है।

सत्य रखा गया

सृष्टि तथा इतिहास में अपने लिए परमेश्वर के संदर्भ पर चर्चा करने के बाद, अब हम अपने लिए परमेश्वर के सदाचारी संदर्भ से अवगत होना चाहते हैं। परमेश्वर हमारे जीवनों का जन्मदाता (सृष्टि में) और बनाए रखने वाला (इतिहास में) है। क्योंकि वह अति पवित्र है, इसलिए यह आशा की जाती है कि मनुष्य भी सदाचारी हो। यह आशा सही भी है। हमें सदाचारी बनाया गया था। पाप में गिरने से पहले पुरुष तथा स्त्री सदाचारी ही थे। परमेश्वर से उनकी सीधी बातचीत थी क्योंकि वे भी परमेश्वर की तरह ही पवित्र थे। परन्तु, पाप करने के बाद, वे डरने लगे ओर उन्हें शर्म आने लगी। उनकी पहली वाली स्थिति अब बिगड़ चुकी थी। यह बात बाबा आदम के जमाने से ही सत्य मानी जाती रही है।

....फिर भी मैं जानताहूं, कि मैं कहीं भी जाता हूं, वहां से ही पृथ्वी से प्रताप चला जाता है।

जो कभी शुद्ध था अब वह कलंकित हो चुका है।

परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर की ओर मुड़कर फिर से उसकी पवित्रता में सहभागी बनने के लिए कहा गया था, "क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं, इस कारण अपने को शुद्ध करके पवित्र बने रहो, क्योंकि मैं पवित्र हूं" (लैव्यव्यवस्था 11:44क)। उनके लौटकर उसके पास आने और उसकी सहायता से उनके लिए पवित्र जीवन बिताने की परमेश्वर की इच्छा सदाचार की बाइबल की शिक्षा का आधार है। हमारे सदाचारी होने का आधार परमेश्वर का पवित्र होना है। उसने हमारे जीने के लिए नियम निश्चित कर दिया है।

इसलिए, हमारे जीवनों में एक "अनिवार्य बात" होती है। यदि हम चाहते हैं कि वह हमें ग्रहण करे तो हमें उसकी शिक्षाओं के अनुसार अपनी नैतिकता को बनाए रखना चाहिए।

हमें कैसा बनना चाहिए और क्या करना चाहिए कि "अनिवार्यता" हमारे विवेक के आधार पर तय नहीं की जा सकती है। विवेक प्राय: हमें अच्छा काम करने के लिए ही कहता है। परन्तु, हमें अहसास होना चाहिए कि हमारे विवेक हमारे सभी दूसरे परिप्रेक्ष्यों की तरह पाप में डूब चुके हैं। अत: हमारे विवेक त्रुटिपूर्ण है। एक तरफ तो, हमें अपने विवेक की बात का उल्लंघन नहीं करना चाहिए, और दूसरी ओर उन्हें अपने अंतिम अगुवे के रूप में भी नहीं मानना चाहिए। हमारी अगुआई परमेश्वर की आज्ञाओं के द्वारा ही होनी चाहिए जो हमारे मनों तथा विवेकों को उसकी बातें बताती है। इसका अर्थ यह हुआ कि हमारी नैतिकता स्पष्ट रूप से हमारी काल्पनिक इच्छाओं पर नहीं बल्कि परमेश्वर के वचन की वास्तविकता पर आधारित होगी।

हमारे नैतिक मापदण्ड न्यायसंगत रूप से कहीं और नहीं मिल सकते हैं। उदाहरण के लिए, शक्ति को हम नैतिकता का आधार नहीं मान सकते। हम जानते हैं कि राष्ट्रों तथा निजी लोगों में लाठी वाली भैंस नहीं मिल जाती।

हम यह भी जानते हैं कि किसी के लिए कोई बात केवल इसलिए नैतिक है क्योंकि वह इच्छानुसार लक्ष्य प्राप्त करने के लिए काम करता है। यदि यह सही होता तो, द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान नाजियों द्वारा एक ही जाति के लाखों लोगों की हत्या नैतिक मानी जाती। इस नरसंसहार का निर्देश एक निश्चित उद्देश्य की प्राप्ति के लिए दिया गया था। परन्तु यह उद्देश्य नैतिक नहीं था। यदि किसी उद्देश्य को पाने के लिए किसी भी साधन का इस्तेमाल उस उद्देश्य को नैतिक बना देता है, तो संसार भर में गर्भपात से लाखों करोड़ों (प्रत्येक वर्ष 15,00,000 से अधिक) लोगों की हत्या नैतिक होती। क्या यह नैतिक या सदाचार है?

कोई बात इसलिए भी नैतिक नहीं है कि "ऐसे ही होता है।" यदि हम एक ऐसे पापरहित जगत में रह रहे होते जिसमें कोई पाप न होता, तो प्राकृतिक रूप से होने वाली हर बात उचित होती। लोग तो अशुद्ध, पापी हो चुके हैं, इसलिए हमारा स्वाभाविक झुकाव सच्च्ची नैतिकता का आधार नहीं है। यदि इसे आधार मान लिया जाए, तो चोर-अलार्म, सुरक्षा गार्ड और पूरे देश में लोगों द्वारा अपने घरों में ताला लगाने का क्या औचित्य है या कानून तोड़ने वाले अपराधियों से जेलें क्यों भरी रहती हैं? हम सब इस बात को समझते हैं कि जिसकी लाठी उसकी भैंस नहीं हो सकती और उपयोगितावाद नैतिकता का आधार नहीं है। पाप में गिरे हुए संसार से वह कार्य क्षेत्र नहीं मिलता जिसमें नैतिकता "स्वभाविक रूप से आती है।" इसके लिए हमें कहीं और देखना पड़ेगा।

परमेश्वर का स्वभाव उसकी पवित्रता के द्वारा बड़ी ही श्रेष्ठता से दिखाया जाता है। उसकी पवित्रता हमारे नैतिक जीवन का आधार तथा नेतृत्व करने वाली बन जाती है। पुराने नियम में उसकी बात बहुत स्पष्ट है, "तुम पवित्र बनो, क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा पवित्र हूं" (लैव्यव्यवस्था 19:2ख)। यह स्वर नये नियम में भी सुनाई देता है। "जैसा तुम्हारा बुलाने वाला पवित्र है वैसे ही तुम भी अपने सारे चाल-चलन में पवित्र बनो" (1 पतरस 1:15)।

हम परमेश्वर की ओर देखते हैं जिसकी नैतिक सिद्धता हमारी नैतिकता का आधार है। बाइबल में हम उस परमेश्वर से मिलते है जो हमें बताता है कि हम सही कैसे बन सकते हैं और कैसे सही काम कर सकते हैं क्योंकि वह स्वयं सही है।

हमें कैसे बनने की "आवश्यकता" है? परमेश्वर न केवल हमें स्पष्ट रूप से यह बताता है कि हमें कैसा बनना "चाहिए" बल्कि हमें यह भी दिखाता है कि हम वैसा कैसे बन सकते हैं जैसा हमें होना "चाहिए"। परमेश्वर के पुत्र, यीशु ने कहा था, "क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, परन्तु अपने भेजने वाले की इच्छा चाहता हूं" (यूहन्ना 5:30ख)। अपने पिता की इच्छा पूरी करने में, हम उसमें परमेश्वर की नैतिक श्रेष्ठता को देखते हैं। इसलिए, मसीह के साथ मिलकर, हम अपनी अनैतिकता को एक तरफ रखकर उसके जीवन की शुद्धता को अपने जीवन में दिखाते हैं। विश्वास तथा पश्चात्ताप से बपतिस्मे में "मसीह को पहनकर" हम उसमें गाड़े जाते, शुद्ध होते और नये जीवन में चलने के लिए जी उठते हैं (प्रेरितों 2:38; रोमियों 6:3, 4; गलतियों 3:26, 27)। हम अपने

विश्वास से उसके अनुग्रह के द्वारा वो बनते हैं जो परमेश्वर हमें बनाना चाहता है (इफिसियों 2:8, 9)।

सच्चाई कार्यशील हुई

मसीह में नये जीवन के बहुत से पहलू है, परन्तु इस पाठ में हमारी दिलचस्पी नैतिक जीवन के बारे में है। हम सदाचारी कैसे रहें? इसका उत्तर आसान लगता है, प्रतिदिन, हम अनैतिक विचार तथा आचरण से परहेज रखकर नैतिक व्यवहार को अमल में लाएं। नैतिक क्या है और अनैतिक क्या है? पहले हमने कुछ सिद्धात देखे थे; अब हम उनको स्पष्ट देख सकते हैं। परन्तु ऐसा करते हुए हम इस विषय की उपेक्षा नहीं करेंगे। हम केवल "सही" दिशा में संकेत ही करेंगे।

हमारा परमेश्वर सदाचारी है। उसकी पवित्रता सब प्रकार के नैतिक दायित्व का आधार है जो कि आमतौर पर स्पष्ट रूप से व्यक्त की जाती है। नकारात्मक निर्देशों की निम्न स्तुतिमाला पर ध्यान दें, हत्या न करना, व्यभिचार न करना, चोरी न करना, झूठी गवाही न देना, बलात्कार न करना, माता-पिता का अनादर न करना या उन्हें कष्ट न देना, झूठ न बोलना, बेईमानी न करना, व्यभिचार जैसे कार्य में लिप्त न होना, निकट संबंधियों से शारीरिक संबंध न रखना, समलैगिंक या विकट बुद्धि के न होना। सकारात्मक निर्देशों की उपासना पर ध्यान दें, दयालु, मेल कराने वाले, प्रेम करने वाले, स्पष्ट बात करने वाले, लिहाज रखने वाले, बुद्धिमान, पवित्र, धीरज रखने वाले, विनम्र, दीन और आदर करने वाले बनो। ये सूचियां अधूरी हैं, परन्तु इनमें हमें सही दिशा में ले जाने का निर्देश है।

हमारा परमेश्वर सदाचारी है। उसने हमें अपने स्वरूप पर बनाया है। वह चाहता है कि हम भी सदाचारी हो। सदाचारी होने का अर्थ उसने स्पष्ट बता दिया है। इस पाठ में हमने सीखा है, (1) पूर्णतया पवित्र परमेश्वर पाने का क्या अर्थ है, (2) उसने पाप में गिर चुके मनुष्यों को हमारी अनैतिकता और अन्य पापों को दूर करने के लिए कैसे अक्सर दिए हैं और (3) हमें नैतिक जीवन की चुनौती दी गई है। भजन लिखने वाले ने कहा है:

> मैं याहूवा के बड़े कामों की चर्चा करूंगा;
> निश्चय मैं तेरे प्राचीनकाल वाले अद्‌भुत कामों को स्मरण करूंगा।
> मैं तेरे सब कामों पर ध्यान करूंगा;
> और तेरे बड़े कामों को सोचूंगा।
> हे परमेश्वर तेरी गति पवित्रता की है।
> कौन सा देवता परमेश्वर के तुल्य बड़ा है? (भजन संहिता 77:11-13)।

आत्म-शुद्धि क्या है?

पैरी बी. कॉथम

जो लोग आत्म-शुद्धि (**परगेटोरी**) की शिक्षा को मानते हैं, उनका ऐसा विश्वास है कि अधोलोक में जाकर आत्माएं उन पापों के लिये दुख उठाती हैं जो

मनुष्य ने बपतिस्मा लेने के बाद किए थे, और उन दुखों के द्वारा आत्माएं अपने पापों का दण्ड भरकर शुद्ध हो जाती हैं, तथा जिसके जितने अधिक पाप होते हैं उतने ही अधिक दुख उसे ''परगेटोरी'' में उठाने पड़ते हैं। और जब वे आत्माएं पापों से शुद्ध हो जाती हैं तो फिर वे स्वर्ग में चली जाती हैं। जो लोग इस सिद्धांत को मानते हैं उनका विश्वास है कि पृथ्वी पर ''कलीसिया'' के पास ऐसी शक्ति है कि वह अपनी प्रार्थनाओं तथा 'मास' के बलिदानों के द्वारा मनुष्य के लिये दुखों की इस अवधि को थोड़ा और कम कर सकती है, या उसे बिल्कुल समाप्त भी कर सकती है। कार्डिनल गिब्बोन्स के कथनानुसार, ''कैथलिक कलीसिया की यह शिक्षा है कि, ...आने वाले जीवन में अस्थायी दण्ड का एक मध्य स्थान है, जिसे उन लोगों के लिये नियुक्त किया गया है जो ऐसे पापों के भीतर मर गए हैं जिनकी क्षमा हो सकती थी, या जिन्होंने उन पापों के विषय में परमेश्वर के न्याय को सन्तुष्ट नहीं किया है, जिनकी क्षमा हो चुकी है। कलीसिया हमें यह भी सिखाती है, कि यद्यपि वे आत्माएं जो उस मध्य स्थान में है, जिसे प्राय: ''परगेटोरी'' कहा जाता है, स्वयं तो अपनी कोई सहायता नहीं कर सकतीं, परन्तु पृथ्वी पर के विश्वासी उन मरे हुओं के लिये प्रार्थना करके उन्हें सहायता पहुंचा सकते हैं।''

किन्तु, सच्चाई क्या है? सच्चाई यह है कि बाइबल में हमें इस प्रकार की कोई शिक्षा नहीं मिलती। बाइबल में ''परगेटोरी'' जैसी किसी बात का कोई वर्णन ही नहीं है। अधोलोक (हादेस) का मध्य स्थान किसी के लिये भी शुद्धि का स्थान नहीं है। कोई भी आत्मा तारतरस (पीड़ा-स्थान) से पैराडाईज़ (स्वर्गलोक) में नहीं जा सकती और न यहाँ से वहाँ जा सकती है। न तो वह धनवान और न लाज़र और न ही वह डाकू जो क्रूस पर चढ़ाया गया था परगेटोरी में गए थे। मनुष्य के पाप मसीह के लोहू के द्वारा शुद्ध होते हैं, ''उनके पुत्र यीशु का लोहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है।'' (1 यूहन्ना 1:7)। परगेटोरी की शिक्षा चाहे कितनी भी अच्छी और चाहने योग्य क्यों न प्रतीत हो, किन्तु मसीह तथा उनके प्रेरितों की शिक्षा से इसका कोई संबंध नहीं है, और न ही परमेश्वर की प्रेरणा से बाइबल के किसी लेखक ने इस विषय में कहीं कुछ कहा है। (देखिए, 2 थिस्सलुनीकियों 2:3-12; प्रकाशित. 13:14)।

इसी के साथ हमें यह भी समझने की ज़रूरत है, कि मृतकों के लिये या मृतकों से प्रार्थना करने की आज्ञा बाइबल नहीं देती। (देखिए 1 तीमुथियुस 2:5; रोमियों 8:34; इब्रानियों 7:25)। प्रत्येक मसीही स्वयं एक याजक है (1 पतरस 2:5; प्रकाशित. 1:6), तथा एक पवित्र जन है (1 कुरिन्थियों 1:2); वह स्वयं मसीह के द्वारा परमेश्वर से प्रार्थना करता है; पवित्र लोगों के द्वारा या पवित्र लोगों से नहीं। मरे हुओं के लिये प्रार्थना करना मनुष्यों की बनाई एक मन-गढ़न्त रीति है। इसी प्रकार, मृतक उन की भी कोई सहायता नहीं कर सकते जो पृथ्वी पर हैं।

उस धनवान ने पृथ्वी पर अपने भाइयों की सहायता के लिये निवेदन तो किया था, किन्तु उससे कुछ लाभ नहीं हुआ था। सो, जो लोग इस पृथ्वी पर से जा चुके हैं उनकी स्थिति को बदलने के लिये अब कुछ भी नहीं किया जा सकता, क्योंकि वहाँ एक अथाह खाई निर्धारित है।

क्योंकि मसीह ने केवल एक ही कलीसिया अर्थात अपनी कलीसिया बनाई

लिरॉय ब्राउनलो

(1) प्रमाण

उसने जिसे स्वर्ग और पृथ्वी पर सारा अधिकार दिया गयाहै, कहा, "मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा...." (मत्ती 16:18)। यीशु ने यह नहीं कहा कि वह एक कलीसिया, कलीसियाएं या अपनी एक कलीसिया बनाएगा। उसने तो यह कहा कि "मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा।" शब्दों के जोड़ पर ध्यान दें, क-ली-सि-या। यीशु ने कितनी कलीसियाएं बनाने की प्रतिज्ञा की थी। जो लोग भाषा का थोड़ा सा ज्ञान रखते हैं और बता सकते हैं कि इसमें प्रयुक्त संज्ञाएं एकवचन है या बहुवचन, वे जानते हैं कि "कलीसिया" एक वचन में ही है। वर्तमान परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए बहुत से भले लोगों के लिए कलीसिया के एक होने की बात पर विश्वास करना कठिन है, परन्तु कलीसियाओं की बहुतायत में मसीह की बातों को बदलने की सामर्थ नहीं है। उसकी घोषणा है, "मेरी बातें कभी न टलेंगी" (मत्ती 24:35)।

2. पौलुस सिखाता है कि देह केवल एक है, "एक ही देह है, और एक ही आत्मा; जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे, अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है" (इफिसियों 4:4)। "क्योंकि जैसे हमारी एक देह में बहुत से अंग हैं, और सब अंगों का एक ही सा काम नहीं वैसे ही हम जो बहुत हैं, मसीह में एक देह होकर आपस में एक-दूसरे के अंग हैं" (रोमियों 12:4, 5)। "परन्तु अब अंग तो बहुत से हैं, परन्तु देह एक ही है" (1 कुरिन्थियों 12:20)। जैसा कि हम देखते हैं, पौलुस ने बार-बार देह के एक होने की शिक्षा दी थी। क्या देह का अर्थ कलीसिया है? हम देखेंगे, "और सब कुछ उसके पांवों तले कर दिया, और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया। यह उसकी देह है" (इफिसियों 1:22, 23)। इस आयत में पौलुस हमें बताता है कि कलीसिया ही देह हैं तथा कुलुस्सियों 1:18 में वह सिखाता है कि देह ही कलीसिया है। सो कलीसिया ही देह है और देह ही कलीसिया है। केवल एक ही देह है; इसलिए कलीसिया केवल एक ही है। यह बात इस प्रतिज्ञा से कितनी मेल खाती है कि "मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा" (मत्ती 16:18)।

3. कलीसिया के एक होने की बात दाखलता के रूप में भी मिलती है, जिसका किसान परमेश्वर है (यूहन्ना 15:1)। इसमें बहुत सी दाखलताओं की तस्वीर नहीं मिलती,

जिसमें किसान ऐसे काम कर रहा हो, जिससे दोनों की भलाई और विकास में रूकावट पड़े। आज संसार उसका किसान है। संसार की ओर अपनी आंखें उठाकर देखने पर हमें यही दिखाई देता है, पर बाइबल में हमें ऐसा नहीं मिलता। इसमें हमें मिलता है कि दाखलता एक ही है और इसका किसान भी एक है।

4. कलीसिया का यह विचार दाख और इसकी डालियों के रूपक से और समझाया गया है, मसीह सच्ची दाखलता है और छुटकारा पाया हुआ हर व्यक्ति इस दाखलता की डाली है (यूहन्ना 15:1-6)। मसीह को हम बहुत सी दाखलताओं के रूप में जिसकी दाखलता में बहुत सी टहनियां हों, नहीं देखते। हर दाखलता और इसकी टहनियां दूसरों के विकास में रूकावट बनकर बढ़ रही हो। नहीं, ऐसा बिल्कुल नहीं मिलता। हम मसीह अर्थात परमेश्वर के पुत्र को एक बड़ी और सुन्दर दाखलता के रूप में देखते हैं, जिसमें उद्धार पाया हुआ हर व्यक्ति, जिसे उसके द्वारा उद्धार मिला है, एक शाखा है और वह उसकी महिमा और स्तुति के लिए फल लाता है। संसार द्वारा दिखाई जाने वाली और बाइबल की तस्वीर में कितना विरोधाभास है।

साम्प्रदायिकवाद को सही ठहराने के असफल प्रयास में मनुष्य ने हमें यह बताने का प्रयास किया है कि दाखलता असली है और सच्ची कलीसिया और शाखाएं संसार की अलग-अलग डिनोमिनेशनें या साम्प्रदायिक कलीसियाएं हैं। साम्प्रदायिकवाद की ओर से उनका यह सबसे बड़ा तर्क है। परन्तु थोड़ा सा विचार करने से यह पता चल जाएगा कि यह बात कई कारणों से सही नहीं हो सकती, (1) यह कहते है कि, "मैं दाखलता हूं, तुम डालियां हो" (यूहन्ना 15:5) मसीह अपने चेलों से बात कर रहा था न कि कलीसियाओं से। उसकी बात को कलीसियाओं पर लागू करना गलत है, जबकि उसने इसे मनुष्यों पर लागू किया था। (2) मसीह ने कहा, "मुझ में बने रहो" जो सच्ची दाखलता है। यदि आप किसी डाली में बने हुए हैं, तो आप गलत कर रहे हैं। मसीह ने यह नहीं कहा कि "किसी डाली में बने रहो"; उसने तो कहा, "मुझ में बने रहो।" (3) वह स्पष्ट कहता है कि डाली मनुष्य है, "यदि कोई मुझ में बना न रहे, तो वह डाली के समान फैंक दिया जाता है।" "....कोई (मनुष्य) ....डाली ...है।" इससे अधिक और स्पष्ट क्या हो सकता है। (4) यह बात सच नहीं हो सकती, क्योंकि यह दृष्टांत का अर्थ बिगाड़ती है। सच्ची दाखलता पर अंगूर, तरबूज, खीरा, लौकी, शलगम आदि होने की बात सोचना असंगत और बेतुका है। भौतिक संसार की बिल्कुल बेतुकी बात को आत्मिक संसार में कोई विवेकी व्यक्ति युक्ति संगत नहीं मान सकता; परन्तु एक धार्मशास्त्री की दलील से जिसे बाइबल से सिद्ध करने के लिए उसके पास कोई वचन नहीं है, बेतुकी बात कोई नहीं है।

5. कलीसिया की एकता घर या परिवार के रूप में भी दिखाई गई है, "परमेश्वर का घर जो जीवते परमेश्वर की कलीसिया है" (1 तीमुथियुस 3:15)। परमेश्वर के घर का अर्थ परमेश्वर का परिवार है। उदाहरण के लिए, दारोगा और उसके घर के लोगों के मन परिवर्तन के बारे में पढ़ने पर हमें पता चलता है कि यह दारोगा और उसका परिवार ही था (प्रेरितों के काम 16)। इसके अलावा, परमेश्वर का घर परमेश्वर का परिवार है और परमेश्वर का परिवार उसकी कलीसिया है। बाइबल में हम परिवार की एक स्पष्ट

तस्वीर देखते हैं, जिसमें परमेश्वर पिता है, मसीह बड़ा भाई और उद्धार पाए हुए सभी लोग "परमेश्वर की संतान है, और यदि संतान हैं, तो वारिस भी, वरन परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस है" (रोमियों 8:16, 17)। बाइबल में हमें सैकड़ों अलग-अलग परिवारों की तस्वीर, दूसरों से थोड़ा-बहुत अलग परिवारों की तस्वीर, जिसमें सबका अपना-अपना प्रबंध हो, अपना नाम हो, और सबका एक ही पिता हो, जिसमें एक ही बड़ा भाई हो और हर परिवार के सब बच्चे उसके वारिस होने का दावा कर रहे हो, नहीं मिलता। इसे तो बहुपत्नीवाद कहा जाएगा। वचन से हो या कर्म से परमेश्वर पर ऐसा आरोप नहीं लगाना चाहिए। ईश्वरीय तस्वीर एक बड़ा संयुक्त परिवार है, जिसमें परमेश्वर पिता है, मसीह बड़ा भाई है और सभी सदस्य परिवार की भलाई के लिए मिलकर काम करते हैं।

6. एक होने का यह विचार एक बाड़ा और एक चरवाहा के रूप में फिर दिखाया गया है, "तब एक ही झुण्ड और एक ही चरवाहा होगा" (यूहन्ना 10:16)। बहुत से झुण्डों को देखने के लिए, जिसमें हर कोई उसी का चरवाहा होने का दावा कर रहा है, बाइबल के बजाय संसार में देखना चाहिए। परमेश्वर अपने वचन में सैंकड़ों झुण्डों की तस्वीर नहीं बनाता, जिसमें विशेष प्रकार की भेड़ें हो, जो कुछ न कुछ दूसरों से अलग हो। परमेश्वर कहता है: "एक ही झुण्ड और एक ही चरवाहा" हो। संसार के सब दिमाग, सारी सम्पत्ति और सारी प्रतिष्ठा मिलकर उसके वचन को नहीं बदल सकते। जितने झुण्ड हैं, उतने ही चरवाहे होंगे। किसी से यह पूछना वचन के अनुसार है कि वह किस चरवाहे के पीछे चल रहा है।

7. एक और रूपक पर विचार करें, इस बार, मानवीय देह के रूप पर। कलीसिया को मानवीय देह के रूप में दिखाया गया है, जिसका सिर मसीह है और छुटकारा पाए हुए सभी लोग उसके अंग है, जो सिर के नियंत्रण तथा निर्देश में कार्य करते हैं (1 कुरिन्थियों 12:12-27; कुलुस्सियों 1:18)। एक ही देह और एक ही सिर। धार्मिक जगत में हम सैंकड़ों देहें देखते हैं, जिनमें हर किसी का दावा है कि मसीह उसका सिर है। कैसी अजीब तस्वीर है। कितना अजीब जन्तु है। क्या हम इसे जीव-जनतु कह सकते हैं? इसका कोई नाम नहीं है, क्योंकि भौतिक संसार में कभी किसी से इसका नाम सुना ही नहीं। इसकी सैकड़ों देहे हैं और हर देह दूसरी देहों से लड़ती है, पर फिर भी हर देह एक ही सिर की समझ द्वारा चलती और उसी से अगुआई पाती है। घबराएं नहीं-आपको जानवरों के संसार में ऐसा जन्तु कभी देखने को नहीं मिलेगा। परन्तु धार्मिक जगत में आपको कई परस्पर विरोधी देहें मिल जाएंगी, जिनमें से हर कोई यही दावा करती है कि मसीह उसका सिर है। निश्चय ही यह जानते हुए कि भौतिक संसार में ऐसा नहीं हो सकता, धार्मिक जगत में इस तर्क को आंखें रखते हुए न देख पाने और कान होते हुए न सुन पाने वाले लोग मौजूद है।

8. पिता के पास मसीह की प्रार्थना में परमेश्वर के लोगों की एकता और अखण्डता भी सिखाई गई है। आइए कुछ देर के लिए इसका अध्ययन करते हैं, "मैं केवल इन्हीं के लिए विनती नहीं करता, परन्तु उनके लिए भी जो इस वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे, कि वे सब एक हो। जैसा तू हे पिता मुझे में है, और मैं तुझ में हूं, वैसे ही वे भी

हम में हो, इसलिए कि जगत प्रतीति करे, कि तू ने मुझे भेजा" (यूहन्ना 17:20, 21)। यीशु ने प्रार्थना की थी कि उस पर विश्वास करने वाले सब लोग एक हो। वह प्रार्थना कलीसियाओं की बहुतायत पर करारी चोट हैं। हम जानते हैं कि यीशु ने एकता के लिए प्रार्थना करने के बाद फूट डालने वाली बहुत सी कलीसियाओं की स्थापना नहीं की। ऐसी चंचलता तो कष्ट कपट का सबसे घृणित कार्य होता। जब भी कोई यह कहता है कि यीशु ने बहुत सी कलीसियाएं, शिक्षाएं और शाखाएं बनाई, तो वह प्रभु पर कपटी होने का आरोप लगा रहा होता है। यह ऐसा कहने के समान है कि यीशु ने एकता के लिए पिता के पास गंभीरता और सच्चे मन से प्रार्थना नहीं की थी। यह हमारे छुटकारा दिलाने वाले की पवित्रता और निष्ठा पर आरोप लगाना है। मनुष्य द्वारा अपने उद्धारकर्त्ता पर ऐसा आरोप लगाना मुझे पसंद नहीं।

बहुत से लोगों ने फूट के लिए प्रार्थना की है। हां, हमने कितनी ही बार प्रचारकों को घुटनों के बल होते हुए प्रार्थना करते हुए देखा है कि वे परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं कि संसार में इतनी कलीसियाएं और इतनी शिक्षाएं है कि कोई भी किसी भी शिक्षा को चुन सकता है। यीशु ने तो ऐसे प्रार्थना नहीं की थी। इसी कारण बहुत से लोग मसीह की सोच से बहुत दूर चले गए है।

(2) कलीसियाओं की बहुतायत

हां, बाइबल "मसीह की कलीसियाएं" (रोमियों 16:16) और "एशिया की सात कलीसियाओं" (प्रकाशित 1:4) की बात करती है। यहां कलीसियाएं या कलीसियाओं शब्द का इस्तेमाल मण्डली के अर्थ में किया गया है। यह उपयोग अब भी प्रचलित है। हम देश में मसीह की कलीसियाओं की बात करते हैं, पर वे सभी एक जैसी है, जिनकी पहचान के चिन्ह एक समान है। हम किसी विशेष इलाके में सात या कई कलीसियाओं की बात करते है, जैसे पवित्र आत्मा ने "एशिया की सात कलीसियाओं" की बात की है।

सबसे संदिग्ध बात पर कि मसीह केवल एक ही कलीसिया का बनाने वाला है, विश्वास दिलाने के लिए इतना ही काफी होना चाहिए। यह सच है, इसलिए हमारे पास और कोई हल नहीं है, इसलिए हमें मसीह की कलीसिया का सदस्य बनकर ही संतुष्ट होना चाहिए।